M.A. IInd Sem

History of India (550 AD - 1200 AD)

Unit - 5

Chahamanas ~~(Dr. Hem~~

Dr. Hemant Kachoal (7-5-2020)

राजस्थान के क्षेत्र मे गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य के पतन के बाद चाहमान राजवंश का साम्राज्य दिखाई देता है। यद्यपि चाहमान लगभग 7वी शताब्दी से अजमेर के उत्तर में सांभर झील के आस पास का क्षेत्र जिसे शाकम्भरी (सपादलक्ष) कहा जाता था, में राज्य करते थे।

चाहमानो की उत्पत्ति के सम्बंध में अनेक मत प्रचलित है' 12वी शताब्दी के बाद के ग्रंथो मे सूर्यवंशी बताया है। जयानक के ग्रंथ ('पृथ्वीराज विजय') तथा नयचन्द्रसूरि के हम्मीर महाकाव्य (15वी शता.) में चाहमानों की उत्पत्ति सूर्य से बताई गयी है। कुछ विद्वान आबु शिलालेख के आधार पर चन्द्रवंशी मानते है। टॉड महोदय विदेशी जाति (सीथियन) से उत्पन्न मानते है डॉ. भण्डारकर का कहना है कि 'खजर' जाति के थे; इनका आधार 'वासुदेव बहमन' की मुद्रा है जिसे वासुदेव चहमन पढ़ा जा सकता है और यही चाहमान वंश का संस्थापक था। इसी प्रकार 'पृथ्वीराजरासो' ने चाहमानो की उत्पत्ति अग्निकुण्ड से मानी गई है'

मूल स्थान:- चाहमानो के मूल स्थान के विषय में भिन्न-भिन्न विवरण मिलते है। पृथ्वीराजविजय में वासुदेव की राजधानी सांभर के पूर्व मे बतायी गयी है। हर्षनाथ अभिलेख में सीकर के निकट, हम्मीर महाकाव्य एवं सूरजन चरित मे चाहमानो की जन्मभूमि 'पुष्कर' मानी है।

उपरोक्त साक्ष्यो के आधार पर कहा जा सकता है कि चाहमानो का राज्य दक्षिण में पुष्कर से लेकर उत्तर मे सीकर तक था। इनकी अन्य शाखाएँ रणथम्भौर, नाडोल, एवं जालौर तक फैली थी।

शाकम्भरी के चाहमान (चौहान)

शाकम्भरी के चाहमानो की वंशावली के आधार पर इस शाखा का संस्थापक 'वासुदेव' था। इसने प्रसिद्ध साँभर झील का निर्माण कराया था। राजशेखर ने बताया कि वासुदेव 551 ई. में शासन कर रहा था। बिजोलिया शिलालेख से ज्ञात होता है कि वासुदेव के पश्चात 'सामन्त' अनन्त प्रदेश (सीकर के निकट का प्रदेश) का सामन्त था।

सामन्त के बाद उसका पुत्र 'जयराज' अथवा 'अजयराज' प्रथम शासक बना। इसके बाद उसका पुत्र विग्रहराज प्रथम एवं पड़पोता चन्द्रराज प्रथम एवं गोपेन्द्रराज ने शासन किया।

गोपेन्द्रराज के बाद उसका पुत्र दुर्लभराज प्रथम चौहान वंश का शासक बना। इसने प्रतिहार शासक वत्सराज के अधीन सामन्त रूप में शासन किया। जब प्रतिहार नरेश वत्सराज ने गौड़ नरेश धर्मपाल से युद्ध किया तब सामन्त दुर्लभराज ने सहायता कर विजय दिलायी। दुर्लभराज की मृत्यु के बाद उसका पुत्र गूवक शासक बना। यह प्रतिहार नरेश नागभट्ट II के अधीन था। सम्भवतः गूवक ने अपनी बहिन कलावती का विवाह नागभट्ट II के साथ किया था तथा सिन्ध के मुस्लिम गवर्नर बशर ने प्रतिहार साम्राज्य के पश्चिमी भाग पर आक्रमण किया परन्तु नागभट्ट II ने अपने सामन्त गोविन्दराज (गूवक) की सहायता से उसे पराजित कर दिया।

गोविन्दराज प्रथम के बाद उसके पुत्र चन्द्रराज II और और पौत्र गूवक II ने क्रमशः राज्य किया। गूवक II के बाद चन्दन शासक बना। इस काल तक दिल्ली के तोमर से शत्रुता बढ़ गई थी। चन्दन ने तोमर शासक रुद्रेन से युद्ध किया एवं उसे मार दिया। चन्दन के पश्चात वाकपतिराज प्रथम शासक बना। यह शैव धर्मावलम्बी था इसने पुष्कर में शिवमन्दिर का निर्माण कराया था।

वाकपतिराज प्रथम के पश्चात उसका पुत्र सिंहराज सिंहासन पर बैठा यह प्रतापी शासक था जिसके नाम के साथ महाराजाधिराज की उपाधि मिलती है। 973 ई. के हर्षनाथ अभिलेख से ज्ञात होता है कि सिंहराज ने तोमर नायक सलवन को पराजित कर एवं राजकुमारों और सामन्तों को बन्दी बना लिया। तथा हर्षनाथ मन्दिर को ग्राम दान में दिये। सिंहराज की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र विग्रहराज शासक बना वह पराक्रमी शासक था इसने गुजरात के चालुक्य नरेश मूलराज के राज्य पर आक्रमण कर उसे पराजित किया, इसके फलस्वरूप मूलराज को सन्धि करनी पड़ी। विग्रहराज II ने नर्मदा नदी के तट पर भृगुकच्छ (भड़ोच) में एक आशापुरी देवी का मन्दिर बनवाया था।

विग्रहराज II के बाद उसका छोटा भाई दुर्लभराज राजा बना। दुर्लभराज II ने नाडोल राज्य पर आक्रमण किया जहाँ चाहमान वंश की दूसरी शाखा के राजा महेन्द्र का शासन था को पराजित कर दिया। इसका साम्राज्य उत्तर में सीकर से लेकर दक्षिण में अजमेर तक, तथा पूर्व में जयपुर से पश्चिम में जोधपुर तक फैल गया था। दुर्लभराज II के बाद उसका पुत्र गोविन्दराज III शासक बना। पृथ्वीराजविजय ने इसे शत्रुओं का मर्दन करने वाला कहा है। राजशेखर ने प्रबन्धकोश में इसे सुलतान महमूद का विजेता कहा है। इसकी पुष्टि फरिश्ता भी करता है, जिसके अनुसार महमूद को सिन्ध के रास्ते गजनी जाना पड़ा, क्योंकि अजमेर के शासक ने अपनी सेना से मारवाड़ का मार्ग रोक दिया था।

गोविन्दराज III की मृत्यु के बाद वाक्पतिराज II एवं वीर्यराम ने शासन किया। यह वीर्यराम नाडोल शाखा के शासक अणहिल्ल द्वारा किये गये आक्रमण में पराजित हुआ। मालवा में भोज का शासन था। भोज ने आक्रमण कर वीर्यराम को मार दिया।

वीर्यराम के पश्चात् चामुण्डराज, सिंहघाट और दुर्लभराज III ने क्रमश: राज्य किया। दुर्लभराज III म्लेच्छों से युद्ध करता हुआ मारा गया। इसके बाद वीरसिंह और विग्रहराज III चाहमान वंश के शासक बने।

विग्रहराज III को वीसल नाम से भी जाना जाता है। पृथ्वीराज विजय से ज्ञात होता है कि गुजरात के चालुक्य राजा कर्ण ने मालवा पर आक्रमण किया तब वहाँ परमार उदयादित्य था और उसकी सहायता विग्रहराज III ने की थी। इस युद्ध में कर्ण की हार हुई थी। इससे स्पष्ट है कि परमार और चाहमानों के बीच मित्रता थी। 'नरपतिनाल्ह' द्वारा रचित काव्य 'बीसलदे रासो' में विग्रहराज III की रानी राजदेवी मालवा के राजा की पुत्री थी। दोनों राजवंशों के बीच वैवाहिक सम्बंध के कारण ही विग्रहपाल III की सहायता से कर्ण को पराजित किया था।

विग्रहराज III के बाद उसका पुत्र पृथ्वीराज प्रथम शासक बना। इसका शिलालेख (1105) सीकर जिले के रेवासा ग्राम के निकट जीणमाता मन्दिर से प्राप्त हुआ है। इसमें इसकी उपाधि "परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर" अंकित है। स्पष्ट है पूर्व के राजाओं से अधिक

प्रतिभाशाली शासक था। 'पृथ्वीराज विजय' में विवरण है कि इसने पुष्कर में ब्राह्मणों को लूटने वाले चालुक्यों को मौत के घाट उतारा। इसी प्रकार विग्रहराज द्वारा अपने राज्य में प्रवेश करने वाले सोलंकियों (चालुक्य) की सेना को पराजित कर दण्ड देने का उल्लेख मिलता है। यह शासक शैव धर्मावलम्बी था, लेकिन विजयसिंह सूरी कृत "उपदेश मालावृत्ति" तथा चन्द्रसूरी का 'मुनिसुव्रतचरित' नामक जैन ग्रंथों में कहा गया है कि इसने रणथम्भौर के जैन मन्दिरों पर कनक कलशों की स्थापना की।

अजयराज (1105-1133 ई.) :- पृथ्वीराज प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अजयराज शासक बना। इसे 'अजयदेव' एवं 'सल्हण' नामों से भी जाना जाता है।

परमारों से युद्ध :- 'चौहान प्रशस्ति' से ज्ञात होता है कि अजयराज ने मालवा के परमार शासक नरवर्मन को पराजित किया।

तुर्कों से युद्ध :- 'पृथ्वीराज विजय' में अजयराज द्वारा गर्जन मातंगों पर विजय का उल्लेख है। यहाँ इसका तात्पर्य गर्जन - गजनी मातंगों - मुसलमानों का अर्थ है। तबकात-ए-नासिरी एवं तारीख-ए-फरिश्ता से ज्ञात होता है कि गजनी के शासकों ने पूर्व में जीते भारतीय क्षेत्र तथा नये क्षेत्रों की विजय के लिए सूबेदारों को नागौर पर अधिकार कर उनकी किलेबन्दी का आदेश दिया। अजयराज ने इन सूबेदारों को अपनी सीमाओं में रहने के लिए बाध्य किया।

चाहमान शासक अजयराज ने अपने नाम के आधार पर अजमेर नगर बसाया था और इसे अपनी राजधानी बनाया तथा अनेक मन्दिरों का निर्माण कराया।

अजयराज के द्वारा चाँदी एवं ताम्बे के सिक्के चलाये। उनके अग्रभाग में पद्मासना देवी का अंकन करवाया था। मेनाल शिलालेख (1168 ई.) तथा धोड़ स्तम्भलेख (1171 ई.) में मुद्राओं का वर्णन किया गया है। अजयराज ने अपनी रानी सोमलदेवी के नाम से भी मुद्राएँ चलाई थी। इनके अग्रभाग पर अश्वारोही की आकृति और पृष्ठभाग पर रानी का नाम उत्कीर्ण किया है। चाँदी की मुद्राएँ कम मिली हैं इन्हें जनभाषा में गधैया सिक्के कहा जाता है।

अजयराज स्वयं शैव धर्म का अनुयायी होने के साथ ही उसने जैन मन्दिर का निर्माण करवाया तथा पार्श्वनाथ मन्दिर पर स्वर्ण कलश स्थापित किया। अन्त में अजयराज ने अपने पुत्र अर्णोराज को शासक बनाया।

जयसिंह के बाद उसका दत्तकपुत्र चाहड़ गद्दी का प्रत्याशी था जो कुमारपाल का प्रतिद्वन्द्वी था इसमें अर्णोराज ने चाहड़ का साथ दिया। और कुमारपाल से युद्ध करने के लिये आगे बढ़ा लेकिन आबू पर्वत के निकट कुमारपाल से पराजित हुआ। लेकिन यह युद्ध निर्णायक नहीं था। तीन चार वर्ष बाद अर्णोराज पुनः गुजरात की ओर बढ़ा। साथ ही अर्णोराज ने मालवा के बल्लाल को भी अपने पक्ष में युद्ध करने को तैयार कर लिया।

कुमारपाल ने अपने सामन्त सेना की एक टुकड़ी बल्लाल के विरुद्ध भेज दी। ताकि दोनों मिल न सके और स्वयं अर्णोराज की ओर आगे बढ़ा चाहड़ को बन्दी बना लिया अर्णोराज ~~के~~ तीर से घायल हो गया उसे भी बन्दी बना लिया। दोनों के बिच सन्धि हुई। इसके अन्तर्गत अर्णोराज ने अपनी पुत्री जल्हणा का विवाह कुमारपाल से कर दिया। इस युद्ध में चाहमान पराजित अवश्य हुए लेकिन उनकी शक्ति बची रही। इस युद्ध के बाद अर्णोराज की ~~मृत्यु हो गई~~। उसकी मारवाड़ी रानी सुधावा के बड़े पुत्र जगद्देव ने उसकी हत्या कर दी अर्णोराज के इस रानी से दो पुत्र थे - <u>विग्रहराज</u> एवं <u>देवदत</u>। चालुक्य वंशी रानी कांचनदेवी से एक पुत्र सोमेश्वर था। अर्णोराज की हत्या के बाद उसका बड़ा पुत्र, पितृहंता जगद्देव शासक बना। जगद्देव के विरुद्ध विद्रोह हुए जिनका नेतृत्व उसके छोटे भाई विग्रहराज ने किया कुछ समय बाद विग्रहराज ने जगद्देव की हत्या कर स्वयं शासक बन गया।

<u>विग्रहराज IV (1153-1164 ई)</u> :-

विग्रहराज लगभग 1153 ई. में अजमेर का शासक बना इसके 11 शिलालेख प्राप्त है, एक अजमेर स्थित "ढाई दिन का झोपड़ा" (सरस्वती मन्दिर) भी है

<u>नाडोल, पाली, एवं जालौर पर आक्रमण</u> :- अर्णोराज - कुमारपाल युद्ध के समय नाडोल, पाली एवं जालौर के शासकों ने कुमारपाल की सहायता की थी। यद्यपि पूर्व में तीनो राज्य अर्णोराज के समर्थक थे। लेकिन जब कुमारपाल अर्णोराज से युद्ध के लिए आबू की ओर आ रहा था, तब कुमारपाल ने पाली, जालौर एवं नाडोल पर आक्रमण कर अपने समर्थकों को शासक बना कर आगे बढ़ा अर्णोराज से युद्ध किया। अब विग्रहराज IV ने तीनो राज्यो पर आक्रमण कर पराजित किया।

अर्णोराज (1133 – 1153ई.) :- अजयराज ने 1133ई. में अपने पुत्र अर्णोराज को गद्दी पर बैठाकर सन्यास ग्रहण किया। इसकी माता का नाम सोमल्ल देवी था। अर्णोराज को अनलदेव, आनलदेव, अनाक एवं अन्ना नाम से भी जाना जाता था।

तुर्कों पर विजय :- अर्णोराज के समय तुर्कों ने नागौर को केन्द्र बनाकर उसके आसपास के क्षेत्र पर आक्रमण कर अजमेर तक पहुँच गये और आनासागर के स्थान पर मैदान में युद्ध हुआ। ये यामिनी वंश के तुर्क थे। इस युद्ध में तुर्क सेनापति पराजित होकर जिसका चौहानों ने पीछा किया और तुर्क सेना के अश्वों को भय जिससे आनेवाले 20 वर्षों तक सपादलक्ष्य की ओर देखने का साहस नहीं हुआ।

मालवा पर विजय :- बिजोलिया शिलालेख से ज्ञात होता है कि अर्णोराज ने मालवा के परमारवंशी नरवर्मन को पराजित किया।

अर्णोराज ने सिन्धु-सरस्वती क्षेत्र के अन्तर्गत पूर्वी पंजाब के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया था। 'चौहान प्रशस्ति' से ज्ञात होता है कि अर्णोराज ने हरितानक (हरियाणा) के निकट कालिंदी (यमुना) नदी के आसपास तोमरो का राज्य था। इनकी राजधानी ढिल्लिका (दिल्ली) थी अर्णोराज ने तोमरों को पराजित किया परन्तु यह विजय ज्यादा समय तक नहीं रही।

गुजरात के चालुक्यों से संघर्ष :- जयसिंह सिद्धराज भी साम्राज्यवादी एवं शक्तिशाली शासक था। इसने (चालुक्य) 1121 ई. में नागौर एवं 1143 में मालवा पर अधिकार कर लिया। इससे अर्णोराज की साम्राज्य विस्तार नीति पर अंकुश लग गया। दोनो राज्यो के बीच संघर्ष का यही कारण था। संघर्ष में अर्णोराज पराजित हुआ। जयसिंह सिद्धराज ने मित्रता रखने के लिए अपनी पुत्री कांचन देवी का विवाह अर्णोराज से कर दिया।

जयसिंह के बाद कुमारपाल के 1142 ई. में सिंहासन पर बैठते ही चालुक्य और चाहमान सम्बन्ध भी समाप्त हो गये। संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गयी। हेमचन्द्र कृत द्वयाश्रय महाकाव्य में अर्णोराज को दोषी ठहराया क्योंकि अर्णोराज ने चालुक्य राज्य आन्तरिक राजनीति में हस्तक्षेप किया था जिससे युद्ध की परिस्थितियाँ बनी।